निपुण लक्ष्य

कमलेंद्र कुमार*

आओ प्यारी सखी-सहेली
निपुण लक्ष्य अपना लें।
हँसते गाते खुशी मनाते
हम मंजिल को पा लें।।

नन्हे-मुन्ने हैं हम बच्चे
बाल वाटिका में आते।
खेल-कूद कर मौज मनाते
पढ़ते-हँसते सब गाते।
चहक-चहक कर चहके हम सब
गीत खुशी के गा लें।
आओ प्यारी सखी-सहेली
निपुण लक्ष्य अपना लें।।1।।

दस तक गिनती याद करेंगे,
अक्षर भी पहचानेंगे।
सरल शब्द को हम पढ़ लेंगे,
लक्ष्य शीघ्र ही भी पा लें।
तुरंत करेंगे काम आज का
कल पर उसे न टालें।
आओ प्यारी सखी-सहेली
निपुण लक्ष्य अपना लें।।2।।
पहली कक्षा के हम बच्चे,
मत समझो हमको कमज़ोर।
सरल शब्द हम पढ़ लेते हैं,
अक्षर अक्षर बाँधे डोर।
आगे बढ़े साथ हम मिलकर,
हाथ गले में डालें।
आओ प्यारी सखी-सहेली
निपुण लक्ष्य अपना लें।।3।।

सौ तक की पूरी हम गिनती,
झटपट ही पढ़ लेते हैं।
मेरे सर जी खूब पढ़ाते,
और प्यार भी देते हैं।
जोड़ घटाना कर लेते हैं
टेंशन हम तो ना लें।
आओ प्यारी सखी-सहेली
निपुण लक्ष्य अपना लें।।4।।

कक्षा दो के हम है बच्चे,
अर्थ समझ पढ़ लेते हैं
और तीन के हम हैं बच्चे,
सरल गुणा कर लेते हैं।
बेल बजी छुट्टी की अपनी,
बस्ता चलो सम्हालें।
आओ प्यारी सखी-सहेली
निपुण लक्ष्य अपना लें।।5।।

*प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय, डगरु का पुरवा, ब्लॉक कुठौंद, जनपद जालौन, उत्तर प्रदेश 285 284